केन्द्रीय विद्यालय, वायु सेना स्थल, दरभंगा

KENDRIYA VIDYALAYA, AFS, DARBHANGA

विद्यालय पत्रिका

VIDYALAYA MAGAZINE

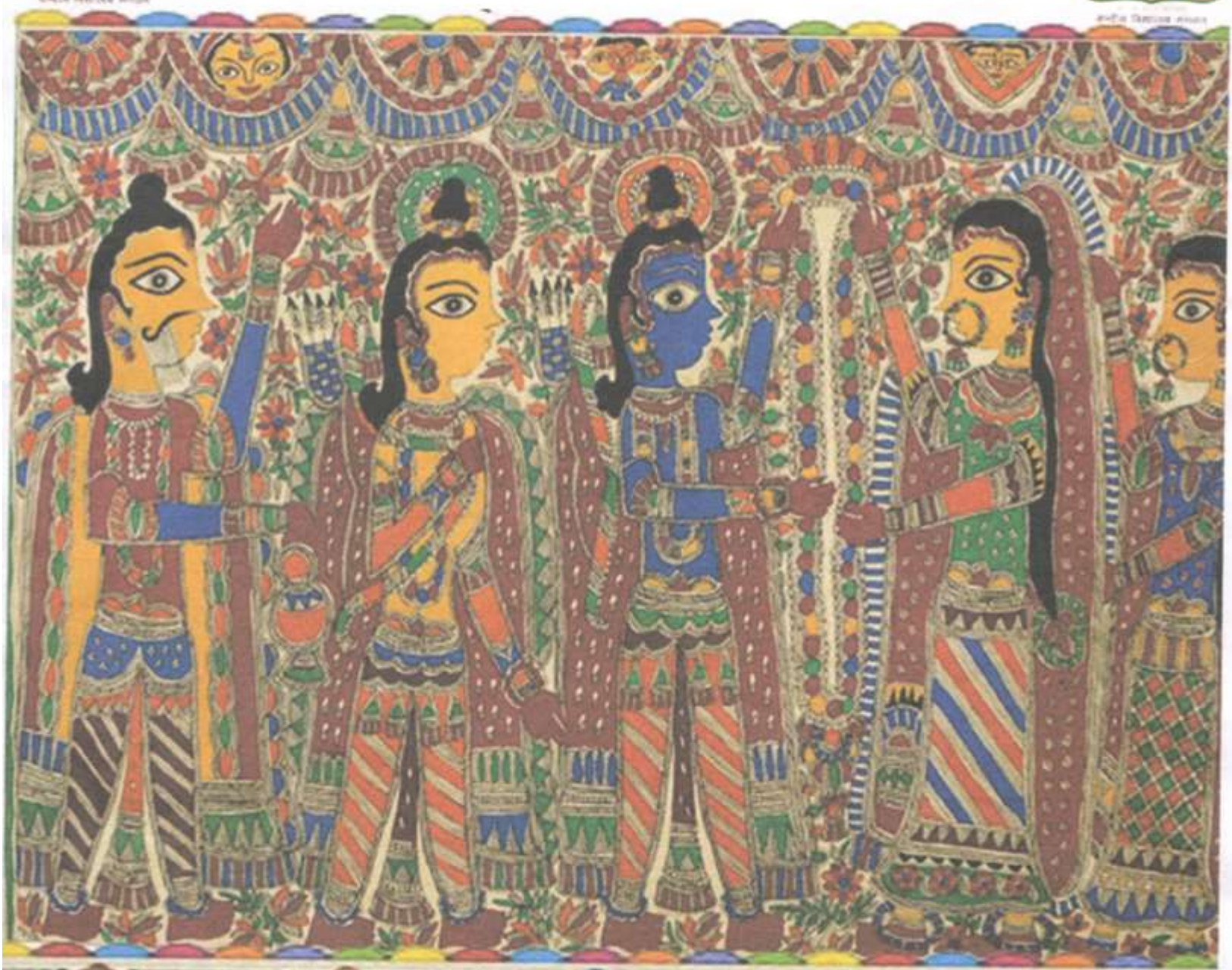

From Principals desk

The magazine reflects the culture and ethos of the vidyalaya nurtured by the school administration over the years. It is an expression of their creative and intellectual faculty. It also underlines their learning and sensibility towards education, society, humanity and their role in the development of the country. By learning each other's faculty and assimilating them they become perfect in life skills and do good for themselves and for humanity for larger platforms.

The present magazine is an expression of such values and skills keeping in minds the exclusive readers. It is hoped that it serves its purpose. We hope that the readers will enjoy themselves by getting associated with this magazine. The mindset, the temperament, the understanding, the wholesome personality of the young children could be elicited from their creative pieces which they have presented.

We have been greatly inspired by our Deputy Commissioner, KVS RO. Patna SH. Y. ARUN KUMAR, a Great Academician and administrator. We are extremely thankful to him and his team of officers (Sh. N. Santosh Kumar, Assistant commissioner, Sh. Ajay Kumar Mishra, Assistant Commissioner and Smt. Soma Ghosh, Assistant Commissioner). for their kind suggestions and guidance.

We owe personal gratitude to the Honourable Chairman, Group Captain Sh. Rajesh Kumar AFS Darbhanga for his kind cooperation in the all round development of the vidyalaya. Under his chairmanship the vidyalya has been rated the topmost vidyalaya of the region . His Positive attitude and response has done a lot for the vidyalaya. Never ever the vidyalya got so much success. It's a great pleasure to work with him. We look forward to add more feathers. We are thankful to the editorial board, The coordinator of activities, Heads of various committees for bringing out this electronic publication.

A. K. MISHRA

(PRINCIPAL)

Editorial

This E. Magazine is the reflection of the Vidyalaya activities such as academics, sports, co-curricular etc. This is one way of expressing ones feeling, Ideas, Creativity and critical thinking about things happening around them. The children in one way or the other have shown their skills, in various genres. Instead of writing any critique on their work, it is left to the readers to read and enjoy the works of the young children and suggest measures to improve it further. We shall be thankful to the readers to receive suggestion(s), towards its improvement.

Kendriya Vidyalayas are such institutions which give ample opportunities to the students on various platform & Games and sports, Art and culture, curricular and co- curricular activities, including the other activities which do not figure in the list of activities keep taking place throughout the year. The interaction that takes place among the students of different regions make them learn each other's good qualities and shake off bad ones. Similarly, in the field of academic and creativity they also learn from each other and enhance their faculty of understanding the nuances of life which make them stand ahead of others.

This magazine notwithstanding the limitations has the stuff in it to catch the attention of its readers.

(Dr. Md. Athar)

Committee

Editorial Board

1) English subject- Dr. Md. Athar (PGT Eng.)
2) Hindi subject – Mr. C. S. Jha (PGT Hindi)
3) Sanskrit subject- Dr. B. K. Mishra (TGT SNK.)
4) Art/Drawing – Mrs. Anjana Sharma (TGT Art.)
5) Co-ordinator - Dr. R.K. Choudhary (PGT Bio)

Photography

1) Mr. Abhijeet Singh Gureniya (PGT CS)
2) Mr. S. B. Singh (PRT)
3) Mrs. Anjana Sharma (TGT Art.)

Computer Design and Typing-

1) Mr. Abhijeet Singh Gureniya (PGT CS)
2) Mr. D. K. Yadav (Computer Instructor)

Compilation-

1) Dr. Md. Athar (PGT Eng.)
2) Sh. G. K. Jha (PGT Chem.)
3) Mr. Abhijeet Singh Gureniya (PGT CS)
4) Dr. B.K Mishra (T.G.T SNK)

औचक निरिक्षण के दौरान सहायक आयुक्त श्री डॉ. ए॰ के॰ मिश्रा के साथ कर्मी

योग दिवस के अवसर पर प्राचार्य महोदय के साथ शिक्षकगण

प्रार्थना सभा के दरम्यान शारीरिक अभ्यास

श्री संतोष कुमार एन (सहायक आयुक्त) का विद्यालय पदार्पण

प्राचार्य द्वारा पुरस्कार वितरण

प्राचार्य द्वारा वार्षिकोत्सव पर परितोषित वितरण

छात्रों के द्वारा कला का प्रदर्शन

पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता एंव पारितोषित वितरण

विद्यालयों के बच्चों द्वारा निर्मित आर्ट एवं क्राफ्ट कार्य

प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु आयोजित क्रीडा कार्यक्रम

वार्षिकोत्सव 2018 से सबन्धित दृश्य

अटल टिंकरिंग प्रयोगशाला का उदघाटन सह वार्षिकौत्सव समारोह का दृश्य

छात्र / छात्रा क्रीडा के दौरान

हिंदी विभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

गुरु

गुरु हैं ज्ञान की पूंजी

याद रखना तुम हमेशा

गुरु के बिना दुनिया में

नहीं हैं कोई अस्तित्व हमारा

इन्होने ही दी हमें शिक्षा

इन्होने ही दी हमें बुद्धि

बिना किसी स्वार्थ के इन्होने

हमें पढाया हमेशा |

उनकी आज्ञा मानना हमेशा,

नहीं करना निराश उन्हें,

उनकी हर बात को

समझाना तुम हमेशा |

रूपक कुमार ठाकुर

ग्यारहवी

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

एक बने, नेक बने

सब नेक रहे , सब एक रहे ,

सब हो प्रसन्न सब हो स्वास्थ रहे |

नफ़रत के दुनियाँ,कभी न चले ,

कुछ ऐसे काम करें जग मैं देश के लिए |

द्वेष सभी का दूर रहें , सब मिलकर चले |

सब एक रहे , सब नेक बने , देश के लिए |

खुशियों के सायें में, सभी जन पले ,

हँसी खुशी प्रेम से, यह देश खिले ,

अँधेरा जहाँ भी रहे, वहाँ चाँदनी मिले ,

फूलों से सदा सबका दामन भरें, देश के लिए |

रात दिन यह देश तरक्की करें ,

आखों में आशा की किरणों से सदा रोशन रहे ,

सब नेक रहे , सब एक रहे, देश के लिए |

अपर्णा कुमारी

प्राथमिक शिक्षिका

केन्द्रीयविद्यालय वायुसेना, दरभंगा

तत् त्व पूषन् अपावृण
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

माँ

हमारे हर मर्ज के दवा होती हैं माँ

कभी डाटती हैं तो कभी गले लगा लेती हैं माँ ..

हमारी आँखों की आशु अपने आखों में समा लेती हैं माँ ..

अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती हैं माँ ..

हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम को भुला देतीं हैं माँ ..

जब भी कभी ठोकर लगे तो हमें तुरंत याद आती हैं माँ ..

दुनिया की तपिश में , हमें आँचल की शीतल छाया देती हैं माँ ..

खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती हैं माँ ..

प्यार भरी हाथों से हमारी थकान मिटाती हैं माँ

बात जब हो लजीज खाने की तो हमें याद आती हैं माँ

रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती हैं माँ

लब्जों मैं जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती हैं माँ ..

भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं |

नाम : ज़ोया नाज़

कक्षा : **IX**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

माँ की ममता

न जाने जब मैं बच्चा था |

गुल्ली डंडा खेला करता था |

चौराहे पर जब मैं भाग कर जाता था |

माँ मेरे पीछे आती थी |

मैं और दूर भाग जाता था |

न जाने माँ को हम पर ममता कितना

न जाने जब मैं बच्चा था |

तब मैं माँ को बहुत परेशान किया करता था |

तब भी माँ गुस्सा न होकर प्यार से माँ समझाती थी |

कहती थी आओ मुन्ना खाना खाओ

और प्यार से तुम सो जाओ |

नाम : पुष्कर कुमार

कक्षा : **VII**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

मेहनत का फल

यह कहानी कुछ ही साल पहले की वास्तविक घटना पर आधारित हैं | किसी गाँव में एक किसान रहता था | वह बहुत गरीब था | उनको दो बड़ी बेटी और दो बेटे थे | जब बेटा – बेटी छोटे थे तो उनकी माँ को लकवा मार गया था | तब उनके पति उनको सरकारी अस्पताल ले गया परन्तु वहाँ सही से इलाज नहीं होने के कारण उसे एक प्राइवेट अस्पताल मैं भर्ती कराया गया कुछ महीनो – साल के बाद वह औरत एकदम ठीक हो गई उस गरीब किसान ने उस औरत के इलाज़ के लिए कर्ज लिए थे |

तो उसके ऊपर बहुत कर्ज हो गया था उसे चुकाने के लिए वह प्रदेश कमाने के लिए जाता हैं और साथ मैं वह बड़े बेटे को ले जाता हैं जिसका नाम मिथिलेश हैं |

वह अपने पिता की तीसरी संतान थी वह कम ही उम्र में पढाई छोड़कर अपने पिता के कार्य में हाथ बटाने लगे |

उसके पिता प्रदेश में जूते सिलने का काम करते थे परन्तु उनके बेटे सिलाई के कार्य का प्रशिक्षण लिया कुछ साल बाद उसने सिलाई का काम पूर्ण कर लिया , उस गरीब किसान के दोनो बेटी बड़ी हो गई थी जिसका नाम अनीता और सुनीता था | उस बड़ी बेटी के शादी तो किसी तरह खुशी – खुशी 2000ई. में हो गई | परन्तु दूसरी बेटी की शादी पैसों की तंगी के कारण जैसे – तैसे हुई | लोगों का कर्ज और ज्यादा बद गया, जब तक बड़े के शादी नहीं हुई थी तब तक पुरे परिवार को लेकर चला और सबका कर्ज भी चुका रहा था | जैसे ही उनके शादी हुई तो वे अपने पिता और छोटे भाई से दूर रहने लगा | छोटा भाई किसी तरह गांव में पढकर १०वी पास करके शहर आ गया और वे शहर में आकार हॉस्टल में रहने लगे | किसी दिन उसे खाना मिलता तो किसी दिन खाना नसीब नहीं होता था | परन्तु वह पढाई से कभी भी पीछे नहीं हटा और पढाई करता रहा, वह लड़का हर एक मुश्किल का सामना करता था |

वह गोभी और कद्दू के छिलके तक का भोजन बनाकर खाता था और पढाई करता रहा १२ कक्षा का पढाई विज्ञान विषय से पास किया और वह गरीब किसान का बेटा स्कूल टॉपर बन गया |

इसी बीच गरीब किसान के पत्नी का ब्रेन हेमरेज होने के कारण मृत्यु हो गई |उसका बेटा उदास रहने लगा परन्तु उसके पिता ने उसे ढाढस देकर पढाते रहे | कुछ साल बाद वह लड़का पढ़ – लिख कर कुछ बना तो तब तक उनके पिता की मृत्यु हो गई थी |

अब उस लड़का को हमेशा यह दर्द रहता था कि काश! अभी माता – पिता जीवित रहते तो की उनका दुःख का समय खत्म हुआ और सुख की घडी आ गई हैं और लड़का अपने माता पिता के याद में खोया रहता हैं और हर एक को अपने जीवन की कथा सुनाकर उसे बेमिसाल जीवन दर्शन कराते हैं |

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

नोट : ये थे एक गरीब किसान की वास्तविक घटना जिसपर हमने प्रकाश डाला हैं |

हर जलते दीपक तले अँधेरा होता हैं | हर रात के पीछे एक सवेरा होता हैं |

लोग डर जाते हैं मुसीबत को देखकर, लेकिन हर मुसीबत के बाद सुख का सबेरा होता हैं |

पंखों से कद नहीं होता , हौसलों से उड़ान होती हैं |

मंजिलें उसी को मिलती हैं, जिनके सपनो में जान होती हैं |

नाम : मनीषा

कक्षा : **VII**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सीखों वाली चिड़िया

काश ! अगर मैं चिड़ियाँ होती
पढने का न चिंता होता
रोज सुबह उड़ जाती मैं
कहने को तो छोटी होती
मगर सबको सीख दे आती मैं
दिन भर दाने ढूंढती मैं
अपने जरुरत से ज्यादा
किसी का कुछ न लेती मैं
अपना काम स्वयं करती मैं
दूसरों के चीज से न ललचाती मैं
सबको अच्छे सीख देकर
लोगों को सबक दे आती मैं
शाम ढलते ही घर आती मैं
अपने बच्चों के संग खुशी
से रात बिताती मैं
जब सुबह जागती तो
अपना काम दुहराती मैं

नाम : सिमरन प्रिया
कक्षा : **IX**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शिक्षक

अक्षर-अक्षर हमें सिखाते
शब्द शब्द का अर्थ बताते,
कभी प्यार से कभी डाट से
जीवन जीना हमें सिखाते |
दिया ज्ञान का भण्डार हमें ,
हैं आभारी उन गुरुओं के हम
जो किया कृतज्ञ आपार हमें |
जाति – धर्म पर लड़े न कोई
करना सबसे प्रेम सिखाते,
माताएं देती नव जीवन,
पिता सुरक्षा करते हैं |
लेकिन सच्ची मानवता
शिक्षक जीवन में भरते हैं
सत्य न्याय के पथ पर चलना,
शिक्षक हमें बतलाते हैं |
जीवन संघर्षों से लड़ना
शिक्षक हमें सिखाते हैं |
ज्ञान दीप के ज्योति जलाकर
मन आलोकित करते हैं
विद्या का धन देकर शिक्षक
जीवन सुख से भरते हैं |
जीवन में कुछ पाना हैं तो ,
शिक्षक का सम्मान करो ,
शीश झुकाकर श्रदा से,
बच्चे उन्हें प्रणाम करो |

अंजना शर्मा
टी. जी. टी. (कला शिक्षा)

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

मज़ेदार चुटकुले

गाँव की एक औरत ने तेजी से आ रही बस को हाथ दिखाकर रोका |

ड्राइवर ने अचानक ब्रेक मारा और पुछा – कहाँ जाना हैं |

रोतीबोली – जाना नहीं हैं ..... बच्चा रो रहा हैं जरा पी पी बजादो |

चिंटू : सर आई ऍम गोइंग क्या अर्थ हैं |

सर : मै जा रहा हूँ |

चिंटू : अरे सर बताइए ना |

सर : मैंने कहा न मै जा रहा हूँ |

चिंटू : अरे सर ऐसे कैसे चले जाओगे, बताकर जाओ वरना नहीं जाने दूँगा |

लड़का : सुनो जरा

लड़की : चुप रहो खाने वक्त बात नहीं करते (खाने के बाद)

लड़की : अब बोलो

लड़का : तेरे प्लेट मैं किंकरीच था |

नर्स : उठो .... अरे उठो |

पप्पू : क्यों उठाया मुझे |

नर्स : मैं तुम्हे नींद के गोली देना भूल गई थी |

एक मक्खी की शादी मच्छर से हो गई

अगले दिन मक्खी बहुत रोई ..

मक्खी की बहन ने पूछा – क्या हुआ |

मक्खी बोली – मैने रात को गुडनाईट जला दी और तेरा जीजा मर गया |

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते रेंगते ,

कब पैरों पर खड़ा हुआ |

तेरी ममता के छावँ में ,

जाने कब बड़ी हुई

कला टीका दूध मलाई

आज भी सब कुछ वैसा हैं |

मैं ही मैं हूँ हर जगह,प्यार ये तेरा कैसा हैं |

सीधा साधा भोला भला

मैं ही सबसे अच्छा हूँ |

कितना भी हो जाऊं बड़ा

माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ |

नाम : साम्भवी कुमारी

कक्षा : **VII**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

क्यों औरत के हिस्से आराम नहीं आता

छुट्टी तो आती है, पर कोई आराम नहीं आता

क्यों औरत के हिस्से में उनका इतवार नहीं आता

देखो- देखो सुबह हो गई, सरपट – सरपट भाग रही

सब तेरा ही हैं पगली, यही सोच कर नाच रही

फिर भी कोई चूक हुई तो सुनती काम नहीं आता

क्यों औरत के हिस्से में उनका इतवार नहीं आता

एक अकेली नार यहाँ पर जाने क्या – क्या काम करें

उसका कुछ भुगतान करो तो शायद तुमको पता चले

सोती हैं तो वो आखिर में और सबसे पहले जागती हैं

होती हैं वो पीड़ा में फिर भी देखो वो हँसती हैं

उनकी ही इच्छाओं का क्यों तुमको ध्यान नहीं आता

क्यों औरत के हिस्से में उनका इतवार नहीं आता

अंजना शर्मा
टी. जी. टी. (कला शिक्षा)
के. वि. दरभंगा

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

कुछ शब्द माँ के नाम

कौन हो तुम इस कदर नाजुक हो कि हाथ लगाने से बिखर जाती हो और इस कदर मजबूत हो कि पर्वतों को चीर कर नदियों कि तरह गुजर जाती हो |
तुम्हारी आवाज़ इतनी मधिम हें कि वक्त को लोरियाँ गा कर सुला दे और यही आवाज़ जब औलाद के हक मैं गूंज उठे तो चट्टान जैसी मुश्किलों को तिनके के तरह उड़ा दे |
ऐसी ठोकर नहीं बनी जो तुम्हें गिरा सके फिर भी रोज गिरती हो दुआओ कि तरह |
धुप जैसे तपते हुए हौसले हैं तुम्हारे और खुद नज़र आती हो छावों की तरह |
पहचान गया तुम्हें जान गया तुम कौन हो |
किसी मंदिर से उड़ता हुआ हवन की धुआं हो तुम |
किसी मस्जिद से आती हुई सवेरे कि आजां हो तुम |
कोई सरहद नहीं जिसकी वो आसमां हो तुम |
माँ हो तुम मेरी माँ हो तुम ||
माँ जब रसोई से रोटियाँ लाये, और अपने हाथ से खिलाये,
तो प्यार ए खान, बड़े सुकुन बड़े करार से खाना |
ये तुम्हरी खुद किस्मती हैं दोस्त, जिंदगी यु सब पर मेहरबां नहीं हैं |
जरा देखो अपने चारो तरफ, किसी के पास रोटियाँ नहीं हैं और किसी के पास माँ नहीं हैं |
सैकड़ों बार सुनी हैं ये कहानी, कि खुदा हर जगह मौजूद नहीं रह सकता था, इसलिए उसने माँ बनाई
लेकिन आगे कि कहानी किसी ने नहीं सुनाई, आज मैं सुनाता हूँ :-
ऐसा नहीं हैं कि माँ को बनाकर खुदा ने कोई जश्न मनाया बल्कि सच तो यह हैं कि वो बहुत पछताया |
कब उनका एक एक जादू किसी दूसरे ने चुरा लिया, वो जान भी नहीं पाया |
खुदा का काम था मोहब्बत, वो माँ करने लगी |
खुदा का काम था हिफाजत वो माँ करने लगी |
खुदा का काम था बरकत वो भी माँ करने लगी |
देखते ही देखते उनके आखों के सामने परवरदीगार हो गया |
वो बहुत मायूस हुआ, बहुत पछताया |
क्योंकि माँ को बनाकर खुदा बेरोजगार हो गया ||

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

नाम : सुशान्त कुमार
कक्षा : **11**

भोर और बरख

जागो बंसीवाले ललना !
जागो मोरे प्यारे !
रजनी बीती भोर भयो हैं, घर घर खुले किंवारे |
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे ||
उठो लालाजी ! भोर भयो हैं सुर नर ठाढ़े द्वारे |
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय-जय शब्द उचारै||
माखन रोटी हाथ मंह लीनी, गद्वन के रखवारे |
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, सारण आयों को तारै ||
बरसे बदरिया सावन की |
सावन की मन भावन की ||
सावन में उमग्यो मेरे मनवा, भनक सुनी हरि आवन की
उमड़ घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर सावन की ||
नन्हीं – नन्हीं बूंदन मेघ बरसे, शीतल पवन सुहावन की |
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर ! आनंद – मंगल गावन की |

मीरा बाई

नाम : नीता कुमारी
कक्षा : **VII**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

फौजी बनाने की आशा

एक प्यारी सी बच्ची अपने फौजी बनाने का सपना देखते हुए सोचती हैं |
मैं फौजी बन जाऊंगी वतन के लिए
मैं बार्डर पर लडूंगी वतन के लिए
मैं अपनी जान दूंगी वतन के लिए
घर से दूर मैं हो जाउंगी वतन के लिए
घर से दूर होने का ख्याल मन में आते ही बच्ची डर जाती हैं और सोचती हैं |
माँ के बिना कैसे रह पाऊँगी मैं
दोस्तों को कैसे छोड़ पाऊँगी मैं
बिना पापा का लोड़ी सुने कैसे रह पाऊँगी मैं
क्या त्योहारों मैं घर आ पाऊँगी मैं
दादी की कहानियाँ कैसे सुन पाऊँगी मैं
भाई से लड़े बिना कैसे रह पाऊँगी मैं
भैया पर सीना तान कैसे खड़ी हो पाऊँगी मैं
कुछ समय सोचने पर बच्ची फैसला करती हैं
और फौजियों की तरह छोड़ दूंगी मैं
धरती को अपनी माँ मानूगीं मैं
हथियारों को दोस्त बनाऊँगी मैं
गोली की आवाजें होंगी पापा की लोडी
बार्डर पर त्यौहार मनाऊँगी मैं
दादी की कहानियों को याद कर रह जाउंगी मैं
वतन के लिए दुश्मनों से लड़ जाउंगी मैं
दुश्मन के सामने सीना तान खड़ी हो जाउंगी मैं
दिन रात लड़ती रह जाउंगी मैं
वतन को चैन की नींद दिलाऊँगी मैं
लड़ते लड़ते तिरंगे से लिपट जाउंगी मैं
तभी वापस घर आऊँगी मैं
सबको अलविदा कह जाउंगी मैं
जाते जाते दुश्मनों के संग
भारत माता की जय कह जाउंगी मैं
मुझे अपने सैनिकों पर बहुत नाज़ हैं | मैं आगे चलकर सैनिक बनना चाहती हूँ |
जय हिंद, जय भारत |

नाम : सिमरन प्रिया
कक्षा : **IX**

तं त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

बापू

बच्चों को बापू प्यारे थे |

वह सारे जग के न्यारे थे |

अच्छी बातें सिखलाते थे |

सबको गले लगाते थे ||

सत्य, अहिंसा, परम धर्म हैं|

यह कथा उनका नारा |

जाति धर्म से बढ़कर है|

भारत देश हमारा ||

नाम : एम. कार्तिकेय

कक्षा : **7**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

मेरी प्यारी माँ

जिसने हमें जन्म दिया हैं ,

जिसने हमें नाजों से पाला हैं |

सबका पहला शब्द हैं माँ,

सबसे प्यारी हैं माँ

भूख लगी तो हमको खिलाती हैं ,

नींद लगी तो चुपके सुलाती हैं |

तेरी अंगुली पकड़कर हमने चलना सीखा हैं |

चोट लगने पर हमको प्यार से सहलाती हैं ,

हर अच्छे- बुरे पहचान करती हैं |

वह कोई और नहीं हमारी माँ हैं |

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

गंगा नदी

उजली उजली बर्फ पिघलकर , बह निकली यह जल की धारा |

दुर्गम पथ से आगे बढती , हुई पूज्य पूजा जग सारा |

मुकुट देश का रजत हिमालय , गंगा हृदय हार देश का |

गंगा हैं पहचान देश की , गंगा हैं आधार देश का |

भारत के कोने कोने में , गाते हैं सब इनके गान |

पतित पावनी देवनदी यह, लिखते विद्यापति विद्वान |

क्रुद्ध हो रही गंगा मैया , हमलोगों के पाप से |

तीव्र धारा अवरुद्ध हो रही , प्रदुषण के शाप से |

इसकी कंचन छवि बनाती, अपनी श्रधा की पहचान |

निर्मल रहे गंगा की सूरत, रखना होगा इसका ध्यान ||

नाम : शालिनी

कक्षा : **IX**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तीन लकीरें

पिता, माथे तुम्हारे ये ...

तीन लकीरें कैसे हटाऊँ ?

क्या वक्त रोक दूं ..

मुमकिन नहीं हैं ..

क्या बदल दूं समाज ..

ये रीति रिवाज ..

वह बहुत कठिन हैं ..

क्या तोड़ दूं कायदे ,ये नियम ये वादे ..

हाँ की तुमसे आशा नहीं हैं ..

तो क्या जहाँ छोड़ दूं .. पर बेटी तुम्हारी बुजदिल नहीं हैं |

नाम : एम. कार्तिकेय

कक्षा : **7**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

दीपावली

दीपावली भारत में हिंदुओं का सबसे प्रसिद्ध त्योहार है | यह कार्तिक मास की आमवस्या को मनाया जाता हैं | दशहरा आते ही लोग दीपावली के तैयारियाँ प्रारंभ कर देते हैं | कहा जाता हैं की इस दिन श्रीराम सीता व लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे | उनके आने की खुशी में लोगों ने दीये जलाकर उनका स्वागत किया तभी से इस त्योहार की परम्परा निरंतर बनी हुई हैं | इस पर्व क साथ अन्य घटनाएँ भी जुड़ी हैं | सिखों के छठे गुरु हरगोविंद साहब को इस दिन बंधन मुक्त किया गया था | आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी को इसी दिन निर्वाण प्राप्त हुआ था | व्यापारियों के लिए यह दिन शुभ लाभ का होता हैं, दीपावली के पूर्व लोग अपने घरों की साफ़ सफाई करते हैं | घरों दुकानों आदि को रंग- रोगन व सफेदी से पुतवाते हैं | दीपावली में हमलोग हुक्कालोली भाजते हैं, फटाखा फोड़ते हैं और दीपावली का मज़ा लेते हैं |

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

|| चौपाई ||

श्री रामचंद्र कृपाल भजुमन
हरण भवभय दारुणं |
नव कंज लोचन कंग मुख
कर कंज पद कंजारुणं ||
कन्दर्प अगणित अमित छवि
नव नील नीरद सुन्दरम |
पटपीत मानहुँ तडित रूचि शुचि |
नोमि जनक सुतावरं ||
भजु दीनबंधु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकंदनं
रघुनन्द आनंद कन्द कौशल
चन्द दशरथ नन्दन ||
शिर मुखुट कुंडल तिलक
चारु उदारु अंग विभूषणं |
आंजानु भुज और चाप धर
संग्राम जित खरदूषण ||
इति वदति तुलीदास शंकर
शेष मुनि मन रंजन |
मम ह्रदय कंज निवास करू
कामादि खलदल गंजनं ||

नाम : ज़ोया नाज़

कक्षा : **IX**

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भरता अभियान चला हैं ,

देखों भारत का हर नौजवान चला हैं

लिखनी हमें नये इबादत हैं

खुशी मैं झूम रहा पूरा भारत हैं

सभी को मिलकर हाथ बढ़ाना हैं

पूरा भारत हमें स्वच्छ बनाना हैं

खड़ा हो गया हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई

सभी का लक्ष्य हर जगह करनी हमें सफाई हैं

हर चेहरे पर छाई नई मुस्कान हैं ,

कितना सुन्दर शुरू हुआ अभियान हैं

सभी को मिलकर सफल बनाना हैं

पूरा भारत हमें स्वच्छ बनाना हैं |

नाम : सौरभ कुमार सुन्दरम

कक्षा ; **VIII**

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

ENGLISH SECTION

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Green Snake

Early morning the day before yesterday
Under the slab of stone
In a crack ,
Eye glittering
Fork tongue licking and flashing
A frog swelling his belly
He lay there quietly
A baby snake, two hands long
A green snake
“ Poor thing. It’s a green snake . still a baby
What harm can it do ? “ I said .
My father replied.
“ A snake’s a snake .”
And mother,
“ That’s where everyone walk.
We do not need trouble kill it
I can’t , I said it.

Father chased him and struck him with a piece of firewood,
And killed him flat

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Name : Rakhshan Rahman
Class : ix

BERMUDA TRIANGLE

The Bermuda triangle is stretch over the Atlantic Ocean, measuring less than thousand miles on any one side. The name 'Bermuda Triangle' remained a colloquial expression throughout the 1950s.By the early 1960s,it acquired the name "The Devil Triangle". Bordered by Florida ,Bermuda and Puerto Rico, the location became famous on account of the strange disappearance of ships, as well as aircrafts in the area. A number of supernatural explanation have been put forward with regard to the mysterious disappearance .

However, many probable logical explanation for the vessel include hurricanes, earthquake ,as well as magnetic fields ,which render navigation devices worthless. But, Most people would not like to accept such boring explanation and would insist for more interesting options like alien abduction or getting sucked into another dimension .

Name: *Rupak* Jha

CLASS:IX

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

TO A SPECAIL TEACHER

When I started in school

This day seemed so far away

Now its here and I can't believe

That time has passed so quickly

But, through your encouragement and guidance

I feel I am ready for tomorrows challenge

Techer's play such an important part

In shaping and guiding

Especially teacher's like you

Thank you for caring so much

Name: Nikhat Parveen
Class:ix

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

My FATHER IS MY LIFE

'A REAL FATHER'

Its not so common any more

To have a dad who's really there

Who is the provider for his family

Who comes home very night

Whose predictability

Creates a sense of stability and security

In his household .

Your time may not seem valuable to you

But its worth a lot to me.

I am thankful that I can depend on you to always be you.

A real father

Responsible trustworthy and greater role model

I've learned a lot of good things

For watching you

Thanks dad.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Name : shambhavi kumari
Class : vii

EVERY TIME

Every time we fall down then again we get up

Every time we fall down but again we get up with the new hope

Every time we fall down but we get up to new chance

Every time we fall down but we get up to see the flower blossoming ,a hot sunny day and a cold winter

Every time we fall down but we get up and step up to see the new dreams

Every time we fall down but we get up to try

Name:Rimjhim

Class:ix

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

SOLDIER

If a soldier dies in a war zone,

Box him up and send him home.

Put all the medals off his chest,

But never forget he did his best.

Tell his mother not to cry…,

Because a soldier is born to die.

Tell his father not to yell in his heart's care,

There's no one to give him tension anymore.

Tell her sister not be upset,

Her brother will not rise after that sunset.

He lost everything just to keep us safe from mankind hunters,

He killed all of them in his last encounter.

He sacrificed himself to blow away those terroristic wind,

Did you guess his last words?

It was nothing else but "Jai-Hind".

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

NAME : SOMA MNISHRA

CLASS : XI

POWER OF THE PEN

The pen is mightier than the atom bomb.

The pen is mightier than the sword .

The pen is symbol of an educated person.

The pen is the weapon of human mind.

The pen is the impression of the human mind.

The pen can change the structure of the society.

NAME:PRIYANSHU DAS
CLASS:XI

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

MATHEMATICS OF LIFE

Life + Love = Happy

Life – Love = Sad

2Lifen = Happy + Sad

Life = Happy + Sad/2

Life = ½ Happy + ½ Sad.

NAME : PRIYANSHU DAS

CLASS : XI

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

THE SYMBOL OF MY COUNRY

The symbol of my country

Means more than what I see

A pelican flag is a symbol

That is fierce and strong and free

Our flags that flies across the land

Waves red,white and blue

It shows our pride in where we live

It stands for freedom,too

Holds a torch in her right hand

She welcomes all to fredom's shore

From every land

The symbols of our country

Represents the best of who we are

People living free and proud

Shining light both near and far

Name: zoya naz

Class:ix

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

FRIENDSHIP

Friendship is love but not in love

Friendship is a secret never to be told

Friendship is a soldier to cry

Friendship is not having to say sorry but do

Friendship is not judging no matter what

Friendship is someone to run

Too when things are so ugly

Friendship is a hand to when things are to rough

Friendship is someone to laugh with not at me

Friendship is just not moving they are there

My friends are all of that hope

You have one just like us.

Name: sarika

Class : ix

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

LIFE IS THE COMPUTER

“Delete” sorrow from your life

“Save”your happiness

“Hide”your enemies

“ Enter” new friends

Make your character as “ hardware”

And heart “software”

Make your mind “floppy”

And shine your body as “CD”

“Re-do” your positive thoughts

“Undo” your negative thoughts

Follow these rules, so that your life’s computer

Will never “Hang”

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Name:Ankush raj

Class:xi

LANGUAGE OF LOVE

Learn the language of love

And you will be as good as a sweet dove

Its the language easy to understand and hard to believe

even in the last stage of life,this language can give you relief

its the language which keeps the best enemies in friendship hand

love and life communicate with us by language of happiness.

So wash your face and wipe your tears

And learn the language of love

And you will be as good as a sweet dove.

Name:Ankush raj

Class:xi

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

GIRLS EDUCATION

If you educate a man You educate an individual

But If you educate a woman You educate a nation

NAME: AADYA
CLASS:VII

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

FAREWELL

It's a congregation where we can tell.

Farewell oh my dear farewell.

In your innings you never got beaten.

Played all the ball with accuracy and precision.

Never your administration had a dilly dally approach.

But it had the perfect blend of humane decision.

There is still many more to explore about you

For I feel you're still far from reaching your culmination.

The rock solid attitude ,the unfailing movement.

Wherefrom has come this daring determination.

May god bless you and may you maintain this tempo.

May you give your health mental and physical to achieve your motto.

Well Madam before you leave

Can I have your beautiful photo

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

NAME:ADEEB ATHAR

CLASS: VII

SUCCESS

Success is a seven letters word. We all want it and we all consider ourselves deserving enough to get it. We all want success but its meaning differs for each one of us. Each one of us is an enigma in oneself. Each one of us is different from rest of us. We all want to be happy and successful. The one who wants success and fame needs a balanced mix of talent, self marketing and opportunities go unnoticed, because there is nobody to notice and use. We first wait for an opportunity and then wait for our turn to complain for not getting it. How much efforts do we really make to get an opportunity? If we do it, we will succeed in life.

NAME:SNEHIL SHUBHAM
CLASS:VII
HOUSE:ASHOKA

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

HOW TO DEVELOP CREATIVE IDEAS

Developing creative ideas is the act of making relation between existing objects and concepts. Creative thinking is not about generating new phenomena but to co-relate things on the basis of our learning and observation. Creativity demands that the first thing is the study of books and understanding the concepts. Collects new and fascinating materials. Think on it. Examine what we have learnt from different angles. Think how to relate observation with objects. Then, our thinking transformes into activities. If we succeed to resolve our problem experimentally, then only we can have a developed creative idea. This determines that our concept is working. These all activities also enhance our knowledge.

NAME:SUJEET SEHGAL
CLASS:XI

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

UNITY IS STRENGTH

There was a farmer. He was very old. He had four sons. The farmer was very unhappy. He wanted them to live peacefully. He tried much but without any result. Finally, he made a plan. He called all his sons. He said to them, “my dear sons! Go out and bring some sticks.” Each son brought sticks and gave them to him. The farmer made a bundle of sticks and said to them, “Dear sons, come one at a time and break the bundle.” All the sons tried, but no one could break it. The farmer then untied the bundle and gave one stick to each son and asked them to break. Each son broke his stick easily. The old farmer said. “you see unity is strength.”

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

NAME:SHALINI
CLASS:IX

I’ am worth it

After waking up everyday ,
With nothing much positive to say
I ask myself with little hope of ray,
Am I worth the race?
By comparing someone’s chapter ten to the start of mine,
Is it fair to judge us on the same line,
I keep asking myself, am I worthy to be fine?

I know I have wings to fly
But it will take time to adjust with the sky,
Still I keep wondering ,am I worth the flight?

I’m moving slow but not applying break,
Everyday learning from all my mistakes,
Keep motivating myself I’m meant for something great,
I keep reminding myself I am worth it, worth it, worth it…….

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Name- Sneha Sri
TGT Science

RIVERS PUZZLE

1. Kolkata is the capital of West Bengal. It is situated on the banks of this river which is a tributary of the Ganga river.

2. Guwahati is the capital of Assam. It lies on the banks of India's broadest river.

3. Delhi is the capital of India. It lies on the bank of this river which originates from the yamunotri.

4. Ahmedabad lies on the bank of this river. An ashram is also named after this river.

5. Madurai is located on the banks of this river that empties in the Palk strait.

6.Haridwar is located on the banks of this most sacred river of the Hindus. This river is longest river in India.

Answers-

1. Hugli

2. Brammaputra

3. Yamuna

4. Sabarmati

5. Vaigai

6. Ganga

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

NAME: SHIVANGI
CLASS: IX

BENEFITS OF READING

Reading is necessary for the development of the creativity of a person. People having different tastes choose different materials to read. A scholar reads to increase his knowledge. Reading novels and magazines is a favourite pastime of many peoples. Teenagers usually read storys of adventure and romance. A mature mind reads books on serious subjects like philosophy, religion, culture and ethics.

Reading is one of the most beneficial activities of man. A person can fight loneliness by reading books. Reading is not only informative but also entertaining. The best way to keep away the tension, tiredness and boredom is to read light entertaining books.

Reading develops a child's vocabulary and understanding. The more a child reads the better he is able to express his views through writhing. New ideas collected by reading books can be used by him. The writing styles of the authors a child reads, influences his own writing style. Thus, he learns how to write prose, poetry etc well.

Reading also helps in improving conversational skills. It also improves his concentration power. When we read a story, all our attention is focused on it, we are not bothered about the rest of the world. Reading also acts as a soothing balm to calm a stressful mind. Reading keeps children occupied. It is rightly said that an idle brain is a devil's workshop. If a child keeps himself busy in reading good books, he gains knowledge and information and also develops his thinking. He can easily see the difference between right and wrong, good and bad, virtue and vice. One who reads becomes wise and is able to handle different situations in life easily. He always has with him a treasure of knowledge which no one can take away from him. To sum up, reading is to the mind what exercise is to the body.

NAME: ROHINI
CLASS: XI

Never lose your hope

What happened if,

You are failed,

What happened if,

You don't get success.

Don't you know that

Failure is the first ,

Step towards success.

Don't stop trying .

One day you will get success.

So, Never lose your hope .

Have faith in you,

And be serene

Keep smiling and

Enjoy your life.

Passing – Failing

Rising – falling

Always happened in life.

So, Never lose your hope.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Vaibhav Kr. Mishra

CLASS IX

Let Me not

Let me not pray to

Be sheltered from dangers,

But to be fearless in facing them.

Let me not beg for

The stilling of my pain,

But from the heart

To conquer it .

Let me not crave in

Anxious fear to be saved,

But hope for the

Patience to win my freedom.

Let me not hide my

mistake due to fear,

but to accept it &

not to repeat it.

Vaibhav Kr. Mishra

CLASS IX

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संस्कृत विभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी एक: महापुरुष: आसीत।स: भारताय अजीवत्। भारताय एवच प्राणान अत्यजत्।अस्य पूर्ण नाम मोहनदास कर्मचंद गाँधी अस्ति। तस्यपितु :नाम कर्मचंद गाँधी मातु: च पुतली बाई अस्ति। तस्य पत्नी कस्तूरबा धार्मिका पतिव्रता नारी आसीत् |

बाल्यकालादेव एक: सरल: बालक: आसीत् | स: सदासत्यम वदति स्म। स :आचार्याणा प्रिय: आसीत्। उच्चशिक्षायै स : आंग्लदेशमगच्छत्। स: विदेश गमनसमये मातु आज्ञया स: संकल्पितवान यत् अहम् मयं न सेविष्ये मांसस्पर्शमपि न करिष्यामि एवं सदा ब्रह्मचर्य आचरिष्यामि |स्वदेशमागत्य सदेशस्य : सेवायाम संलग्न: अभवत्। अस्य ईश्वरे दढ:विश्वास: आसीत्।

स: आंग्लशासकानाम विरोधे सत्याग्रह आंदोलनं प्रावर्तयत। तस्य श्रध्दा अहिंसायाम आसीत। तस्यसर्व: समय: सर्व: शक्ति, सर्वंधनम च देशाय एवासीत्।

निधि कुमारी

कक्षा – एकादश

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सूक्ति सुधा

प्रदोषे दीपक: चन्द्रः प्रभाते दीपक: रवि:।

त्रलोक्ये दीपक: धर्म :सुपुत्र कुलदीपक: ।

संध्याकाल में चंद्रमा दीपक है, प्रातः काल में सूर्य दीपक है, तीनों लोकों में धर्म दीपक है और सुपुत्र कुल का दीपक है |

देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन:|

गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः ||

अर्थ: - भाग्य रूठ जाए तो गुरु रक्षा करता है, गुरु रूठ जाए तो कोई नहीं होता | गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, इसमे कोई संदेह नहीं |

हस्तस्य भूषणम दानम, सत्यं कंठस्य भूषणं |

श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणम् किं प्रयोजनम्।।

अर्थ:- हाथ का आभूषण दान है, गले का आभूषण सत्य है| कान की शोभा सुनने से है, अन्य आभूषणों की क्या आवश्यकता है।

न कश्चित कस्यचित् मित्रं न कश्चित कस्यचित् रिपुः |

व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा।।

अर्थ: - न आज कोई किसी का मित्र होता है, न कोई किसी का शत्रु | व्यवहार से ही मित्र या शत्रु बनते है |

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमतां |

व्यसनेन च मूर्खाणाम निद्रया कलहेन वा |

अर्थ: - बुद्धिमान लोग काव्य शास्त्र का अध्ययन करने में अपना समय व्यतीत करते हैं, जबकि मूर्ख लोग निद्रा, कलह और बुरी आदतों में अपना समय बिताते है |

भूमे: गरीयसी माता, स्वर्गात उच्चतरः पिता।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात अपि गरीयसी।।

अर्थः- भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊंचे पिता हैं| माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किं|

लोचनाभ्याम विहीनस्य, दर्पण: किं करिष्यति।।

अर्थः- जिस मनुष्य के पास स्वयं का विवेक नही है

शास्त्र उसका क्या करेंगे जैसे नेत्रविहीन व्यक्ति

के लिए दर्पण व्यर्थ है।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः

तस्मात तदैव वक्तव्यम वचने का दरिद्रता

अर्थः- प्रिय वाक्य वोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते है | अतः प्रिय वचन ही बोलना चाहिए।

ऐसे वचन बोलने में कंजूसी कैसी|

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

रमा

कक्षा एकादश

आदिकवि:वाल्मीकि:

सर्वस्मिन् विश्वे विख्यातस्य महाकाव्य रामायणस्य रचनाकारः महर्षिः वाल्मिकिः संस्कृतस्य आदिकविः मन्यते। एकदा सः ऋषिक्रौंच मिथुनयोः एक व्याघेन शिष्यैः सह तमसानद्याः तीरे भ्रमति स्म। सहसा : वध्यमानम् अवलोक्य, करुणार्द्र सः व्याधम् अवदत् ।

'मा निषाद् प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनदिकमवधीः काममोहितम्।'

एतत् श्रुत्वा व्याधोऽपि पश्चात्तांपदग्धः अभवत्। एतत् कथ्यते यत् तदैव स्वयं ब्रह्मा भूमौ आगच्छत्, मुनिं च रामकथां रचयितुम् अप्रेरयत्। एवं रामायण नाम महाकाव्यस्य निर्माणं जाता।

रामायणस्य रचनाकाल' शतकमस्ति। अस्य काव्यस्य छन्दः-खिष्टाब्द पूर्व पञ्चम : :अनुष्टुप' अस्ति। अस्मिन् काव्ये महाकाव्यस्य सर्वाणि लक्षणानि सन्ति। काव्ये कृतं प्रकृतिवर्णनम् अतीव मनोरमम् दृश्य अस्ति। षड्ऋतूनां, नदीनां, पर्वतानां वर्णनमपि सुन्दरम्। उपमा, अनुप्रासादि अलंकाराणाम् उपयोग : सुन्दराणि रूपाणि च दृश्यन्ते अस्मिन् काव्ये।

कवेशैली अतिगम्भीरा :, लालित्यपूर्णा च अस्ति। भारतीयाः अनेके कवयः वाल्मीकेः काव्यशैल्या प्रभाविताः सन्ति। रामायण महाकाव्यं तु तेषां स्फूर्तिस्थानं खलु। नूनम् अयम् आदिकविः सर्वेषां कवीनाम् आदर्शः एव। प्रकृत्याः स्वाभाविक वर्णनं, तथा प्राकृतिकदृश्यानां सजीव चित्रणं-, भाषा सौष्ठवता, आदयः रामायणस्य विशेषता: सन्ति।:

वाल्मीकेः काव्यं सालङ्कृतं परं सरलमस्ति। अस्य चरित्रचित्रणम् अप्रतिमम्। सर्वे पात्रासजीवाः विद्यन्ते। : रामायणस्य प्रमुख रसकरुणः। कविना सूचितः शोकः काव्यरूपेण श्लोकत्वम् आगतः इति कथ्यते। : हिन्दूसमाजे रामायणस्य महत्त्वम् अधिकम् अस्ति। अद्यपि प्रतिगृहे एतत्काव्यं पूज्यते। आदिकविना दत्तः अयम् अमूल्यः निधिः सर्वे-रामरक्षास्तोत्रे उचितमुक्तम्'पूजनीयः। :

'कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्।'

प्रियांशु दास

कक्षा – एकादश

संस्कृत भाषाया: महत्वं

संस्कृत देव भाषा अस्ति |संस्कृतम् भारतस्य विश्वस्य च पुरातनतमा भाषा। अन्यास भाषाणां तथा पुरातनं साहित्यमद्य नोपलभ्यते यथा पुरातनं संस्कृतसाहित्यम् । विश्वस्य पुरातनतमो ग्रन्थः ऋग्वेदः संस्कृतभाषयैव निबद्धः । इयमतीव वैज्ञानिकी भाषा, अस्या पाणिनिमुनिप्रणीतं व्याकरणमतीव वैज्ञानिकं यस्य साहाय्येन अद्यापि वयं तान् पुरातनग्रन्थान् अवबोधुं शक्नुमः ।

संस्कृतमेव हि भारतम् । यदि वयं प्राचीन भारतमर्वाचीनं वापि भारतं ज्ञातुमिच्छामः तह नास्ति संस्कृतसमोऽन्य उपायः । भारतीयजनस्य अद्यापि यत् चिन्तनं तस्य मूलं प्राचीनसंस्कृतवाङ्मये दृश्यते । यदि च तत् चिन्तनं वयं नूतनविज्ञानाभिमुख कर्तुमिच्छामस्तह तस्य मूलं पृष्ठभूमि च अविज्ञाय विच्छिन्नरूपेण कतु न शक्नुमः। यदि वयमिच्छामो यत् भारतीयजनः परिवर्तनम् आत्मसात् कुर्यात् तदा तेन परिवर्तनेन आत्मरूपेण संस्कृतिमयेन संस्कृतमयेन च भाव्यम् ।।

संस्कृतस्य शब्दाः सर्वासु भारतीयभाषासु कासुचित् वैदेशिकभाषासु च प्रयुज्यन्ते । अतः यदि वयं भारतीयजनानामेकीभावं, तेषां भाषागतम् अभेदं सौमनस्यं च इच्छामः तदा संस्कृतज्ञानेनैव तत सम्भाव्यते । संस्कृतं सर्वाःभारतीयभाषाः सर्वं जनमानसं च एकसूत्रेण संयोजयति । प्राचीनभारतीयेतिहासस्य - भूगोलस्य च समीचीनं चित्रं संस्कृताध्ययनं विना असम्भवम् ।संस्कृतसाहित्यम् अति समृद्धं विविधज्ञानमयं च वर्तते । अत्र वैदिकं ज्ञानमुपलभ्यते, यस्य क्वचिदपि साम्यं नास्ति । महाभारतं तु विश्वकोशरूपमस्ति । रामायणशिक्षाः दिशि दिशि प्रचरिताः। उपनिषद्भिर्वैदेशिकैरपि विद्वद्भिः शान्तिः प्राप्ता। कालिदासादीनां काव्यानाम् उत्कर्षस्य तु कथैव का। चरकसुश्रतयोरायुर्वेदः, भारद्वाजस्य विमानशास्त्रम्, कणादस्य परमाणुविज्ञानम्, गौतमस्य तर्कविद्या, शुल्बसूत्राणां ज्यामितिविज्ञानम्, आर्यभटस्य खगोलशास्त्रम् इत्येवमादीनि अनेकानि विज्ञानानि शास्त्राणि च संस्कृतभाषोपनिबद्धान्येव । अद्यापि राजनीतिविषये शासनतन्त्रविषये च कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रं मनुस्मृतिश्च मार्गप्रदर्शके स्तः ।वयं भारतीयाः । अस्माभिः स्वकीयं गौरवमयं वाङ्मयमधीत्यैव तदाधारे भविष्यनिर्माणं कर्तव्यं, तदैवात्मोत्कर्षः सम्भाव्यते। स च उत्कर्षः आत्माधिष्ठितो हृदयग्राही वास्तविकोन्नतिकारी भविष्यति । यानि राष्ट्राणि स्वगौरवं न विस्मरन्ति तान्येव सफलतायाश्चरमोत्कर्ष प्राप्नुवन्ति ।

रूपक कुमार ठाकुर

कक्षा – एकादश

हास्य- परिहास:

अध्यापक :- तव किम नाम?

छात्र :- बालजीवनम।

अध्यापक :- किम् पितु: नाम?

छात्र :- श्री सूर्यप्रकाश:

अध्यापक :- आंग्लभाषायाम वद ?

छात्र :- मम नाम लाइफबॉय अस्ति।

मम पितु: नाम च सनलाइट अस्ति।

भूगोलशिक्षक :- (छात्रान प्रति)स्वर्ण कुत्र लभ्यते ?

छात्र:- मम मातु पैटिकायाम।

पिता : सोनू त्वं शयनसमये स्व उपनेत्रं

शायाने किमर्थं परित्यजसि।

सोनू :- न उपनेत्रं विना कथमहं

स्वप्नान द्रष्टुं शक्नोमि?

पिता :- वत्स! को च उष्ट्रे गजे! भेदः?

पुत्र :- पितृवय उष्ट्रस्य पृच्छा पृष्ठत : भवति

गजस्य च पुरतः |

तुरन जबीन

कक्षा – नवम्

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

जयतु–जयतु भारतदेश :

अस्माकं भारतदेशः विश्वशिरोमणि : आसीत, अस्ति, भविष्यति च । अस्य एव स्तुति : अस्यां कवितायां कृता |

जयतु – जयतु भारतदेशः.
जयतु – जयतु अस्मद्देश :।
सदा हि एष : गौरवशाली
वर्धते हि सदा हि एषः !!
जयतु – जयतु भारतदेशः.
जयतु – जयतु अस्मद्देश :।
अस्य रक्षा सदा विधेया,
प्राणान्समर्प्य एकता नेया।
सर्वतः उन्नतः देश मदीय : ,
जयतु – जयतु भारतदेशः ॥
संस्कृतिरस्य परम विशाला,
सम्पूर्णे विश्वे परम ख्याता
कार्यरक्षा सदा हि अस्या :,
जयतु – जयतु भारतदेशः.
जयतु – जयतु अस्मद्देश :।

अभिनव चौधरी
कक्षा : सप्तम

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सूक्तयः

संस्कृताभाणकाः

1. अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
2. आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः |
3. इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः |
4. उधोगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी |
5. को न याति वशं लोके मुखे पिनडेन पूरितः |
6. छिद्रेश्वनर्थाः बहुली भवन्ति|
7. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
8. दूरतः पर्वताः रम्याः |
9. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे |
10. परोपदेशे पाणिडत्यम् |
11. बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्।

.12अति सर्वत्र वर्जयेत्।

13. महाजनो येन गतः स पन्थाः।
14. वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात्।
15. वीरभोग्या वसुंधरा |
16. विनाशकालें विपरीतबुद्धि।
17. शरीरमादयं खलु धर्मसाधनम् |
18. मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।
19. सत्यमेव जयते।

.20हितं मनोंहारि च दुर्लभं वचः|

नाम-शिवांगी

कक्षा- नवम्

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रियं भारतम्

राजतां मे मनसि नः प्रिय भारतम् |
योजाह विन्ध्यगोदावरी शाश्वतम् मेखला तितं तत्स्वरूपम लसतुनवी
मस्तकं हिमगिरिः सागरो नूपुरम्|
राजतां मे.....
शिविदधीचि प्रभ्रतिमिस्तथा सेवितम्
चन्द्रशेखर – भगतसिंह बिस्मिल प्रियम|
गान्धिना यत्प्रदत्तं स्वकीयं जीवनं
प्राणसर्वस्वदार्नेः कृतार्थीकृतम्|
राजतां मे.....
स्वप्नदर्शी – प्रजातन्त्र समपोषकम्
विश्वनेत्री प्रियं नेहरुपण्डितम्|
शास्ति राजेन्द्र -अबदुलहमीदादिकम्
पुत्रजातं च लब्ध्वातिदर्पन्वितम् |

राजतां मे.....
सैन्यदाक्ष्यज्य विज्ञान प्रौधोगिकीम्
विस्तृतां कर्तुम्ग्रेसरं यत सदा,
राष्ट्रचिन्तापरं श्रमपरं चाहर्निशं
हर्षितं वीक्ष्य सर्वत्र मोदान्वितम्।
राजतां मे .....

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

निखत परवीन
कक्षा 9

सुभाषित श्लोका:

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥

न कश्चित् कस्यचित् मित्रं,न कश्चित् कस्यचित् रिपुः |
व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा॥

दुर्जनः स्वस्वभावेन परकार्य विनश्यति ।
नोदर तृप्तिमायाति मूषकः वस्त्रभक्षकः ॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् , न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम् ।
प्रियं च नानृतम् ब्रूयात् , एष धर्मः सनातनः |

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे|
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ||
न विना परवादेन रमते दुर्जनो जनः ।
काकः सर्वरसान् भुंक्ते विनामध्यं न तृप्यति ॥

रूपम कुमारी
कक्षा 6

केन्द्रीय विद्यालय संगठन